Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2016 = 6.17, www.srjis.com
UGC Approved Sr. No.45269, JULY-AUG 2017, VOL- 4/35

ljdkjh rFkk ifCyd Ldy d fo|kfFk;k dh 0;kdj.k lEcU/kh v'kf);k dk rqyukRed v/;u

tkxfr xlrk

हिंदी अध्यापक, ए. वी. एम स्कूल, जसमीत बेदी, सहायक प्रोफेसर, बी. सी. एम. कॉलेज ऑफ एजुकेशन

Abstract

प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य सरकारी तथा पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों के व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों का तुलनात्मक अध्ययन करना था। इस अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि को अपनाते हुए प्रतिदर्श के रूप में 100 सरकारी स्कूल तथा 100 पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों का चयन किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु अनुसंधानकर्ता द्वारा निर्मित प्रश्न पत्र का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु मध्यमान एवमः मानक विचलन तथा t-ratio, Table & graph का प्रयोग किया गया। प्रदत्तों के विश्लेषणोपरांत सरकारी तथा पब्लिक स्कूल स्कूल के विद्यार्थियों के व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया। जबकि ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी तथा शहरी क्षेत्र के सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों के व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों में विशेष अंतर नहीं पाया गया। ग्रामीण क्षेत्र के पब्लिक स्कूल तथा शहरी क्षेत्र के पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों के व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों में भी विशेष अंतर नहीं पाया गया।

Scholarly Research Journal's* is licensed Based on a work at *www.srjis.com

çLrkouk

मानव एक सामाजिक प्राणी है। उसके पास भाषा ही सर्वोत्तम साधन है। जिसके द्वारा वह अपने भावों व् विचारों को प्रकट करता है। मनुष्य अपने भावों की अभिव्यक्ति इंगितों, मुख– मुद्राओं आदि के माध्यम से भी करता है। परंतु मनुष्य के इंगितों और पशु–पक्षियों की ध्वनियों को भाषा की संज्ञा नहीं दी जा सकती। ध्वनियां जब मुख से निकलती हैं, तब वे भाषा का मौखिक या उच्चरित रूप धारण कर लेती हैं, परन्तु यह ध्वनियां विशिष्ट चिन्हों के साथ लिखी जाती हैं, तब वह भाषा का रूप धारण करती हैं। जिसके द्वारा मानव अपने भावों को प्रकट कर सकता है, परन्तु यह भी सत्य है कि मानव गलतियों का पुतला है। इस तरह वह भाषा को बोलते और लिखते समय कई तरह की गलतियां करता है, यह सब उसके व्याकरण के अधूरे ज्ञान के कारण होता है, जिसका निवारण करना अनिवार्य है।

0;kdj.k– व्याकरण वास्तव में शब्दों के प्रयोग का अनुशासक है। व्याकरण ऐसा साधन है , जो वाक्य में शब्दों का स्थान निर्धारित करता है। वास्तव में व्याकरण व्यवहार में आने वाली भाषा को व्यवस्थित कर के उस में व्याप्त नियमों का दिग्दर्शन करता है। शब्दों का शुद्ध रूप स्थिर करना, उनका वर्गीकरण करना, वाक्य में शब्दों का स्थान निर्धारित करना इत्यादि व्याकरण के प्रमुख कार्य है। अतः व्याकरण के अध्ययन से भाषा के गठन का सम्यक ज्ञान प्राप्त होता है।

भाषा परिवर्तनशील है, व्याकरण उसके इस परिवर्तन पर नियंत्रण का कार्य करता है। व्याकरण भाषा को अव्यवस्थित होने से बचाता है, भाषा के स्वरुप को शुद्ध रखने, उसको विकृतियों से बचने के लिए व्याकरण का ज्ञान अति आवश्यक है।व्याकरण एक कला है। जिसका उद्देश्य भाषा के माध्यम से बोलने

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

और लिखने की कला का विकास करना माना जाता है, यदि भाषा सीखनी हैं तो व्याकरण की कला भी सीखनी पड़ेगी। तार्किक दृष्टिकोण से व्याकरण की शिक्षा इसलिए भी आवश्यक है क्योंकि बिना इसके विद्यार्थी अपने भावों को शुद्धता के साथ प्रकट नहीं कर सकते। इसके अभाव में विद्यार्थी भाषा उच्चारण और लेखन में कई प्रकार की अशुद्धियां करते है। व्याकरण का सही ज्ञान भाषा के महत्त्व को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। भाषा उच्चारण व् लेखन की अशुद्धियों को दूर करने के लिए व्याकरण का पूर्ण ज्ञान अति आवश्यक है। डॉ. जैगर के अनुसार ,ष्प्रचलित भाषा संबंधी नियमो की व्याख्या ही व्याकरण है।"

इस क्षेत्र में जितने भी अनुसन्धान हुए है, उनके द्वारा इन समस्याओं को उजागर किया गया हैद्य जिसका वर्णन इस प्रकार है। चंडीगढ़ बहु– भाषी प्रान्त है। यद्दपि यहाँ हिंदी लोक व्यवहार में पर्याप्त रूप से प्रयोग की जाती है परंतु अनेक भाषाओं का प्रभाव भी पड़ता है, इसलिए छात्र और अध्यापक भी इस से प्रभावित है जिस से उन छात्रों के वाचन और लेखन दोनों में अशुद्धियां पायी जाती है, श्रीवास्तव (2012). विद्यार्थी व्याकरण के नियमों की जानकारी के अभाव में अधिक गलतियां करते है, लता (2012). छात्र– छात्राए हिंदी लिखते समय एक जैसी गलतियां करते है, प्रिया(2014). ग्रामीण व् शहरी क्षेत्र के पब्लिक स्कूलों के छात्रों की हिंदी लेखन संबंधी अशुद्धियो के मध्य अंक में महत्वपूर्ण अंतर है, कौर (2015). राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के द्वारा लेखन में की जाने वाली अशुद्धियां उपलब्धि परीक्षण को प्रभावित करती है, कुसुम (2016).

इन अनुसंधानों से स्पष्ट होता है कि विद्यार्थियों की व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों के लिए कई प्रकार के कारक उत्तरदायी होते है।

leL;k dk dFku

सरकारी स्कूल नतथा पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों की व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों का अध्ययन।

mís';

1. सरकारी स्कूल तथा पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों की व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों का तुलनात्मक अध्ययन।
2. सरकारी स्कूल तथा पब्लिक स्कूल के छात्रों की व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों का तुलनात्मक अध्ययन।
3. सरकारी स्कूल तथा पब्लिक स्कूल की छात्राओं की व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों का तुलनात्मक अध्ययन।
4. ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी स्कूल तथा पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों की व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों का तुलनात्मक अध्ययन।
5. शहरी क्षेत्र के सरकारी स्कूल तथा पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों की व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों का तुलनात्मक अध्ययन।

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

ifjdYiuk

1. सरकारी स्कूल तथा पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों की व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों में सार्थक अंतर नहीं होता है।
2. सरकारी स्कूल तथा पब्लिक स्कूल के छात्रों की व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों में सार्थक अंतर नहीं होता हैद्य
3. सरकारी स्कूल तथा पब्लिक स्कूल की छात्राओं की व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों में सार्थक अंतर नहीं होता है।
4. ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों की व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों में सार्थक अंतर नहीं होता है
5. ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों की व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों में सार्थक अंतर नहीं होता है।

v/;;u fof/k

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया हैं।

midj.k

व्याकरण की अशुद्धियों की जाँच के लिए अनुसंधानकर्ता के द्वारा निर्मित प्रश्न पत्र का प्रयोग किया गया।

lkf[;dh rduhdk

मध्यमान (Mean), S.D, S.ED, t-ratio, Table & Graph.

çnÙkk dk ls'y"k.k vkj fo'y"k.k

fo|kfFk;k dh 0;kdj.k lEcU/kh v'kf);k dk n'kkrh lkj.kh

Group	N	t-ratio	Level of significance
सरकारी स्कूल (सम्पूर्ण न्यादर्श)	100	8-2	**Significant**
पब्लिक स्कूल (सम्पूर्ण न्यादर्श)	100		
सरकारी स्कूल (छात्र)	50	3-11	**Significant**
पब्लिक स्कूल (छात्र)	50		
सरकारी स्कूल (छात्राएं)	50	7-29	**Significant**
पब्लिक स्कूल (छात्राएं)	50		
ग्रामीण क्षेत्र (सरकारी स्कूल)	50	1-83	**Non-significant**
शहरी क्षेत्र (सरकारी स्कूल)	50		
ग्रामीण क्षेत्र (पब्लिक स्कूल)	50	2-03	**0.01 not significant**
शहरी क्षेत्र (पब्लिक स्कूल)	50		**0.05 significant**

सारणी यह दर्शाती है कि सरकारी स्कूल तथा पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों का ज–तंजपव 8.2 है जो कि 0.05 और 0.01 स्तर पर स्वीकार्य है। सरकारी स्कूल तथा पब्लिक स्कूल के छात्रों का t-ratio 3.

11 है जो कि 0.05 और 0.01 स्तर पर स्वीकार्य है। सरकारी स्कूल तथा पब्लिक स्कूल के छात्राओं का t-ratio 7.29 है जो कि 0.05 और 0.01 स्तर पर स्वीकार्य है। ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के सरकारी स्कूल के विद्यार्थियों का t-ratio 1.83 है जो कि 0.05 और 0.01 स्तर पर अस्वीकार्य है। ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्र के पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों का t-ratio 2.03 है जो कि 0.05 स्तर पर स्वीकार्य है और 0.01 स्तर पर अस्वीकार्य है।

fo|kfFk;ksa dh 0;kdj.k lEc/kh v'kqf);ksa dk n'kkrk xkQ

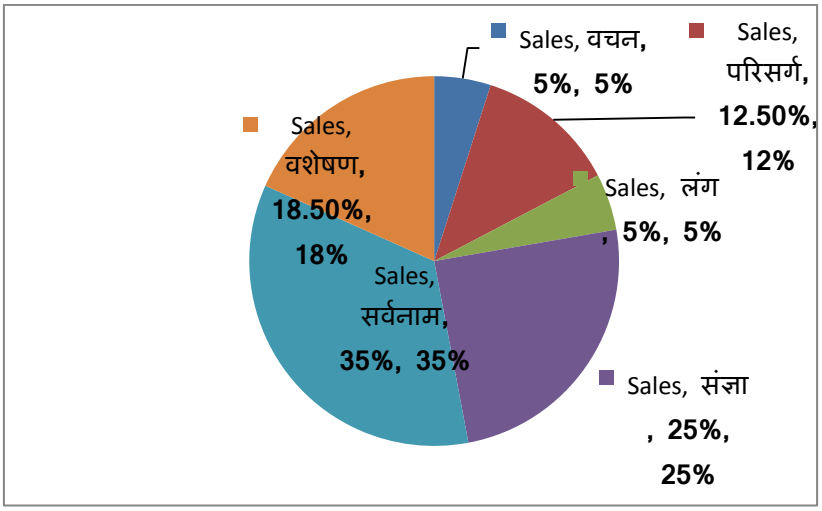

fu"d"k

उपयुक्त विवेचन से स्पष्ट है कि सरकारी तथा पब्लिक स्कूल के विद्यार्थी व्याकरण का औसत ज्ञान रखते है। शोध से स्पष्ट होता है कि सरकारी तथा पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों की व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों में विशेष अंतर है। पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों की तुलना में सरकारी स्कूल के विद्यार्थी अधिक गलतियां करते है। परन्तु शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्र के सरकारी स्कूल के विद्यार्थी व्याकरण में एक जैसी ही गलतियां करते है।

lUnHkZ lwph

कुसुम (2016).चंडीगढ़ के राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की लेखन अशुद्धियों का अध्ययन, The Educational Beacom, A Research Journal, 5 (1).

कौर, मनजीत (2015). सरकारी तथा पब्लिक स्कूल के सातवीं कक्षा के विद्याथियों की हिंदी लेखन सम्बन्धी अशुद्धियों का तुलनात्मक अध्ययन, एम .एड. लघु शोध प्रबंध ,पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, 13 –17.

बाला, सोनू (2010). हिंदी भाषा की व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों का अध्ययन ,एम .एड.लघु शोध प्रबंध , पंजाब विश्वविद्यालय ,चंडीगढ़ ,18 –23.

लता,सुमन(2012). सरकारी स्कूल के नवमी कक्षा के छात्रों की हिंदी विषय में व्याकरण सम्बन्धी अशुद्धियों का अध्ययन, एम .एड लघु शोध प्रबंध ,पंजाब विश्वविद्यालय ,चंडीगढ़ ,17 –24.

विभा (2006).हिंदी भाषा की शब्द लेखन शुद्धता में व्याकरण की भूमिका, एम.एड.लघु शोध प्रबंध, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, 43–48.

शर्मा, अनिल (2006).भारतीय संस्कृति के सन्दर्भ में हिंदी का मूल्यांकन, एम.एड.लघु शोध प्रबंध, पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़, 27–34.

शारदा,सुरभि(2002). होशियारपुर जिलें के आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा हिंदी लिखते समय की जाती गलतियों का अध्ययन ,एम .एड लघु शोध प्रबंध ,पंजाब विश्वविद्यालय ,चंडीगढ़ ,25 –27.

श्रीवास्तव,अजय(2012).विद्यालयी छात्रों की हिंदी में वाचन एवं लेखन संबंधी अशुद्धियों का अध्ययन, Prachi Journal of Psycho- Culture Dimensions, *28(1), 185–187.*

Copyright © 2017, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies